जीवन एक दृष्टि अनेक

हर व्यक्ति जीवन जीता है। जन्म से मृत्यु तक का समय जीवन कहलाता है। प्रकृति के नियम के अनुसार जन्म के साथ मृत्यु निश्चित हो जाती है। जहां संयोग है वहां वियोग है। संयोग के साथ वियोग निश्चित है। जब हम यात्रा करते हैं तो समीप में बैठे हुए यात्री से हमारा संबंध हो जाना स्वाभाविक है। समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से सम्पर्क और सम्बन्ध हो जाता है। किन्तु जिसको जहां जाना है स्टेशन आते ही वह गाड़ी से उतरकर चला जाता है। प्रत्येक प्राणी के आने जाने का क्रम निश्चित है। इसी प्रकार संसार में सभी प्राणी अपने कर्मों का फल भोगने के लिए आते है और फल भोगते हैं और नये कर्मों का अर्जन करते हैं और आयुष्य कर्म के पूरा हो जाने पर संसार से विदा हो जाते है। यह संसार एक रंगमंच है। नाटक के पात्रों की तरह प्रत्येक प्राणी अपना–अपना अभिनय करता है और अभिनय करके विदा हो जाता है। इस जीवन को जीने का तरीका अनेक हो सकता है, किन्तु जीवन सभी को जीना पड़ता है। एक व्यक्ति बगीचे में गया। वहां अनेक फूलों का पौधा है। कौन पुष्प वह चयन करे ये कठिनाई वहां आ जाती है। इतने सारे फूलों को देखकर अनेक विकल्प मन में आने लगते है। इसी प्रकार जैसा हमने कर्म बीज बोया है वैसा ही परिणाम हमारे सामने आता है। कोई व्यक्ति बड़ी दूकान या मोल में जाता है तो उसे खरीदनी तो केवल एक वस्तु है किन्तु समान की इतनी अधिक वैरायटी होती हैं कि उसे चुनाव करने में कठिनाई हो जाती है। वहां अनेक दृष्टियां काम करने लगती है। वस्तु को देखने का नजरियां भिन्न–भिन्न होता है। किसी एक वस्तु के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति की दृष्टि सकारात्मक हो सकती है और किसी व्यक्ति की दृष्टि नकारात्मक। वस्तु एक ही है, किन्तु देखने का नजरियां भिन्न–भिन्न है। छोटे बच्चे जब अपने मां बाप के साथ कही जाते हैं तो वस्तुओं को लेने की उनकी चाह होती है। वे जिस भी वस्तु को देखते हैं उसको लेना चाहते हैं किन्तु माता पिता उपयोगिता के आधार पर वस्तु का निर्धारण करते हैं। वे उसी वस्तु को महत्व देते हैं जिसका उपयोग गृहस्थी के कार्य में होना है।

जीवन निर्माण के लिए अनेक क्षेत्र हैं। विद्यार्थी को जिस क्षेत्र में जाना होता है उस क्षेत्र का चुनाव करके उसी के अनुरूप अध्ययन करता है। अध्ययन के विषयों को चुनता है और दृढ़संकल्प करके लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। किस दिशा में आगे बढ़ना है इसका चयन शक्ति के अनुसार सभी को करना पड़ता है। जब हम कहीं भोजन करने के लिए जाते हैं तो रुचिकर भोजन आने पर हम तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं और अगर रुचिकर नहीं है तो छोड़ देते हैं। परीक्षण स्वयं का होना चाहिए, किन्तु विचार सभी से लेना चाहिए। रास्ते का चुनाव तो स्वयं करना पड़ता है। दृष्टि का चुनाव गुण और अवगुण के आधार पर करना पड़ता है। लक्ष्य का निर्धारण करने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं– ज्ञेय, हेय और उपादेय। ज्ञेय का अर्थ है– जानना। हमें जहां कही से भी अच्छी बातें मिले उसे विनम्रता पूर्वक ग्रहण कर लेना चाहिए। हेय का तात्पर्य है– बुराईयों का त्याग। उपादेय का अर्थ है– जीवन के लिए उपयोगी और समाज के लिए उपयोगी जो हमारे कर्त्तव्य हैं उनका हम सच्चाई से पालन करें। ऐसा करने से समाज का विकास होता है। प्रेम एक ऐसा रसायन है जो समाज के हर व्यक्ति को एक सूत्र में बांधकर रखता है। समाज और राष्ट्र की एकता इसी सूत्र से बंधी हुई है। बहुत से शास्त्रों का अध्ययन कर लेने के बाद भी यदि दृष्टि में परिवर्तन नहीं आया, उसके भाव को जीवन में नहीं उतारा गया तो ऐसा ज्ञान निरर्थक होता है। इससे अच्छा तो ढ़ाई अक्षरवाला प्रेम शब्द है जो कि जीवन में सदैव समरसता को बनाये रखता है और पूरे समाज को जोड़कर रखता है। प्रेम एक ऐसा तत्व है जिसके रहने पर बुद्धि आस्तिक्य भाव से युक्त हो जाती है। सर्वत्र आत्मवत् भाव दिखलाई देने लगता है। स्व और पर का भेद मिट जाता है। क्रोध, मान, माया और लोभ का सर्वथा विनाश हो जाता है। इन चारों तत्वों में से यदि एक का भी प्रवेश अंदर हो जाये तो अन्य बुराईयां अपने आप प्रवेश कर जाती हैं और बुद्धि को नकारात्मकता की ओर ले जाती हैं।

मानव को जीवन में पुण्यकारी प्रवत्तियां करके जीवन यापन करना चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की भावना से पुण्यकारी प्रवृत्तियां करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन के उत्कर्ष को निरन्तर गतिशील बनाये रखने के लिए व्रत, नियम आदि के पालन और मर्यादा से अपने आचार को संवारना आवश्यक है। हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह से

निवृत्त होकर जीवन यापन करना चाहिए। इस प्रकार हिंसा आदि पांच पापों के दोषों को जानकर आत्मोत्कर्ष के उद्देश्य से इनका त्याग या इनसे विरति की प्रतिज्ञा लेकर पुनः कभी उनका सेवन नहीं करना चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये जब मर्यादित रूप से ग्रहण किये जाते हैं, तब जीवन की दृष्टि में परिवर्तन आता है। वह पूर्ण आत्मबल के साथ पूर्ण चारित्र के पथ पर अग्रसर होता है। अहिंसा का पालन करने से पुण्य और हिंसा करने से पाप प्राप्त होता है। अनेकात्मक दृष्टि समन्वयवादी दृष्टि होती है। भारत में इस दृष्टि की महत्ती आवश्यकता है। सामाजिक संरचना का सुधारने और समरसता कायम करने के लिए जीवन में अनेकात्मक दृष्टि का पालन करना आवश्यक है। इस दृष्टि से मत भिन्न हो सकता है, किन्तु मन भिन्न नहीं होता। अनेकता में एकता को खोजना भारतीय दृष्टि है। इसके कारण समाज में समरसता बनी रहती है।